रुद्राष्टाध्याय

Page No. Date :

प्रोजेक्ट का नाम

दोहरा अभिशाप
नामक आत्मकथा।
एक उपन्यास मे
कौसल्या बैसंत्री का
चरित्र विवेचन

8.5/10

Page No. Date :

कला और वाणिज्य महाविदयालय वडुज

नाम : शिंगाडे राजेंद्र चंद्रकांत
कक्षा : बी.ए.भाग III
विषय : स्पेशल हिंदी
रोल नं : 548
प्रश्नपत्र क्र. 12

विधा विशेष का अध्ययन

मा. शिक्षक :- प्रा बी.टी. साबळे.

सत्र. २०१८-२०१९.

colors

Page No. Date :

प्रस्तावना

कथानक संगठन का प्रमुख उद्देश्य पात्रो की चारित्रीक विशेषताओं का उद्घाटन करना होता है। उपन्यासकार अपनी अनुभूति के आधारपर चरित्र सृष्टी अंकित करता है। पात्रो के राग, विराग, संघर्ष, दया करुणा तथा संवेदन शिलता आदी स्वाभाविक गुणों का तथा हिंसा शत्रुता क्रुरता अनुदारता आदि दुर्गुणों का चित्रण यथार्थ के धारतल पर करता है।

कौसल्या बैसंत्री का दोहरा अभिशाप दलित जिवन की अभिव्यक्त करणे मे सफल हुआ है। कौसल्या जिने अपने भोगे हुए यथार्थ को आत्मकथात्मक उपन्यास के रुप मे पाठको के सामने रखा है। इन्होने व्यक्तीवादी स्तर पर अन्य चरित्रो के आंतरीक द्वंदो का सुक्ष्म और विस्तृत वर्णन किया है।

colors

Scanned with CamScanner

बैसती जी का जिवन परिचय

कौसल्या जीका जन्म अनुसुचित जाती के दलित महार परिवार मे हुआ था। 8 सितबर 1926 को महाराष्ट्र के नागपुर के खलासी लाईन बस्ती मे हुआ था। कौसल्या बैसंत्री जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे नारी मुक्ती आंदोलन चलानि वाली समाजसेविका तथा कार्यकर्ता लेखिका थी। उनका मराठी, हिंदी, तथा अंग्रेजी भाषाओंपर बराबर अधिकार था। वे बी.ए. तक पढीलीखी सुशीक्षीत महिला नारी थी। उनका 'दोहरा अभिशाप' यह दलित नारी का हिंदी मे लिखा गया पहला आत्मकथन था। इस विशेषताके के कारण उन्हे अधिक प्रसिद्धी प्राप्त हुई। अध्ययन शिलता संघर्ष शिलता संवेदनशीलता, नम्रता, स्वाभीमानी आदी उनके स्वभाव के कुछ गुण है।

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

कौसल्या बैसत्री का कृतित्व

कौसल्या बैसन्त्री प्रमुख दलित कथाकार
अनुवाद लेखिका तथा आंदोलन कार्यकर्ता थीं।
वे दलित नारी की समस्याओं पर लेखन करने
वाली संवेदनशील लेखिका थी डॉ. बाबासाहेब
जी के वृत्तपत्र में उनके लेख तथा भाषण
आते थे। मद्रास के 'जयभीम दलित' पर भी
मे भी सामाजिक विषयो पर लिखती थी।
इसके साथ हंस, युद्धरत आम आदमी आदी
मासिक पत्रिकाओं में और दिनमान, कथा देश
में स्त्रीवादी कथाए तथा नारी जागृती विषय
लिखती थी। उन्होंने उर्मिला पवार (मराठी लेखिका)
न्याय, सहावे बोट, बाईपी जात, आयदान इस
कथाओं का हिंदी में अनुवाद किया।
उन्होंने इसके साथ डॉ. आंबेडकर, महात्मा-
फुले मुक्ताबाई पर लेख लिखे।

colors

गरिब एवं दलित माँ की संतान

उपन्यास की नाइका एक गरीब तथा दलीत माँ की संतान है। माँ भागीरथी का जिवन संघर्षमय था। वह अथक परिश्रमी, मेहनती और उद्यमशील महिला थी। गोर गरीबी और जातीय प्रताडनाओंको सामना करते हुए उसने कौसल्या को पढाया था।

भागीरथी एक मील मजुर थी। बच्चो की परवरीश ठीक ढंग से हो इसके लिए वह अनेक कष्ट उठाती थी। छुटीयो के दिन चुडीया, कुमकुम, शिकेकाई आदि सामान बेचकर बच्चो की पढाई के लिए पैसे जुटाती थी। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजीके भाषन का प्रभाव उनपर था।

Page No. Date :

* घर काम के कुशल *

कौसल्या घर के काम मे कुशल एवं अभिरुची सपन्न थी। यह कुशलता उसे अपनी माँ से विरासत में मिली थी। माँ ने कौसल्या को कपडे धोना तथा घर लिपना आदी सिखाया था। घर के हर काम मे कुशल थी। छुट्टी के दिन कौसल्या अपनी बहनो के साथ घर की आड़ी दीवार मिट्टी से और निचे की जमीन को गोबर से लीपती थी। लड़कीया के शब्दो मे, मै छोटी बाल्टी को रस्सी बांधकर कुंए मे डालकर पानी खीचती और माँ और बड़ी बहन मिलकर उस पानी से कपडे धोते थे।

colors

Page No. Date :

सुशिक्षीत एवं बुद्धीजीवी

कौसल्या अपनी माता पीता के सहकार्य तथा जाईबाई की प्रेरणा से शिक्षा ग्रहण करणे का निश्चय किया। अनेक समस्याओं का सामाना करते हुए वह पढाई में आगे बढती गई। लेखिका के शब्दो मे नगरपालीका के सदस्य भी तुलाराम साखरे जीने छोटी सी सभा और चायपाही का आयोजन किया। हमारी उपजाती के काफी लोग आये थे। कुछ लोगो ने हमारी प्रसंशा कि और कहा की यह गर्व की बात है। दो लडकीयो ने मेट्रीक पास किया। मेरे गले मे हार डाला गया। मां बाबा आये थे मेरे साथ। और वे फुले नही समा रहे थे।

Page No. Date :

अपने परिवार के प्रति समर्पित

कौसल्या अपने परिवार के प्रति समर्पित दिखाई देती है। चाहे वह परिवार पिता का हो या पति का। दोनों परिवार की जिम्मेदारियाँ उसने समर्पण भाव से सभाली। उसके माता-पिता ने अपने बच्चों को सुशिक्षित तथा संस्कारी बनाने के लिए कष्ट उठाये थे। उन कष्टों को लेखिका ने हमेशा आदर किया और बी.ए. तक पढाई पुरी की। माँ बाप का सपना साकार किया। वह अपने भाई बहनों से बहुत प्रेम करती थी। कौसल्या अपनी पति और अपने बच्चों के प्रति भी समर्पित रही है।

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

7) रीति - रिवाजों के प्रति प्रेम

कौसल्या को अपने समाज के रीति - रिवाजों के प्रति नितांत प्रेम दिखाई देती है। अस्पृश्य समाज के लोग शिवाजी और कृष्णजी के भक्त थे। लेखिका वर्णन करती है, बस्ती मे लोग श्री कृष्ण - जन्म अष्टमीकी पुजा बडी धुमधुम से करते थे। बजार मे खुब सुंदर सुंदर श्रीकृष्ण की मुर्तियाँ मिलती थी लोग इन्हे खरीदकर लाते थे। बाबा भी सुंदर सी मुर्ति खरीदकर लाते थे। एक दो पहले घर - आँगन की सफाई और लिपापोती होजाती थी। घर को रंग - बिरंगे कागज के फुलों और झंडियो से सजाते थे। कोसरे अपजाती के एक त्योहार के बारे मे लेखिका लिखती है। जनवरी महिने मे एक त्योहार आता जिसे सिर्फ कोसरे उपजाती ही मनाती थी असे 'सुर्य' कहते। सुर्य कि पुजा करने वह भी आँगन मे सुर्य निकालने पर सबेरे मुर्गी की बली देते थे। मुर्गी का सिर काटकर उसे दिन भर आँगन मे ही पुजा के स्थान पर टोकरी ढाककर रखते थे। मुर्गा पकाकर खाते थे परन्तू रिवाज बंद हो गये

colors

Scanned with CamScanner

(8) संगीत के प्रति सम्मान :—

कौसल्या संगीत प्रेमी थी। उनकी आवाज अच्छी थी इसलिए कॉलेज के कार्यक्रमों वह ग्रुप में वंदे मातरम जन गन मन गाती थी कौसल्या ने स्कूल के एक नाटक मे अभिनय के साथ गाना भी गाया था मेखिका के शब्दों मे , सबने मेरे गाने और अभिनय को सराहा और मुझे एक चांदी का मैडल मिला था। गाना सीखना चाह रही थी परन्तु पैसे की तंगी और घर से संगीत स्कूल बहुत दूर होने के कारण संगीत ही सीख पाई मन मारकर रह जाना पडा।

मेरी आवाज अच्छी थी। अतः संगीत के प्रति रुझान होने हुए भी उसे गरीबो के चलते गाना सीख नहीं पायी इसका उनको दुःख था सरोद वादक अपनी अकबर खाँ के सरोद वादक से वह मोहित हो गयी थी।

colors

9) जातीभेद के प्रति चोट –

कौसल्या जी को जातीभेद में अविश्वास एवं चोट थी जातीय प्रताडनाओं को उसके परिवार तथा समाज ने बहुत भोगा था इसी कारण उसके मन में बचपन से ही छुआछुत को लेकर विद्रोह की भावना पनपती है बाबा ने हेड मिस्ट्रेस के चरणों के पास अपना सिर झुकाया दूर से क्योंकी वे अछुत थे स्पर्श नही कर सकते थे। बाबा का चेहरा कितना मासूम लग रहा था उस वक्त। मेरी आँखो भर आयी थी। अब भी इस बात की याद आते ही बहुत व्यथित हो जाती हूँ। अपमान महसूस करती हूँ जाती पाँती बनाने के लिए का मुह नोचने का मन करता है। अपमान का बदला लेने का मन करता है। कौसल्या नाही अपनी जाती को हिन समझता है और न सवर्ण जाति को अपने से ऊँचा। चिटफंड की उच्चवर्गिय एक महिला शिकायत करती है की कौसल्या पहले से ही अपनी जाति नही बताई और अपनी जाति छिपाई। तब कौसल्या ने इस महिला को मुँहतोड जवाब दिया। अपनी पीठ पर चिपकाकर रखूँ? आप सभ्य नही लगती सभ्य आदमी जाती पाँति का विचार आपने मन में नही रखते. और जाति पाति मानने वाले लोगो से मैं अपना संपर्क नही रखती मुझे पहले पता होता कि आप जातीभाती

Page No.   Date :

मानती है. तो मै स्वयं आपके चिरफॅड मे नहीं
आती। लेखिका के मन मे जातिभेद के
प्रति विद्रोह दिखाई देता है.

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

उपन्यास के प्रमुख पात्र

* कौसल्या बैसन्त्री

1) उपन्यास कि नाईका प्रमुख स्त्री पात्र

कौसल्या बैसन्त्री इस 'दोहरा अभिशाप' इस उपन्यास की नाईका एवं लेखिका है। कौसल्या का जन सन 8 सितंबर 1926 को नागपुर की वालसी लाईन नामक बस्ती मे एक गरीब एवं दलित परिवार मे हुआ। माँ का नाम भागीरथी तथा पिता का नाम राम नंदेश्वर था। कौसल्या को पाच बहने और एक भाई था। कौसल्या के बचपन मे उसे कचरी नाम से बुलाते थे।

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

निष्कर्ष :-

इस आत्मकथात्मक उपन्यास से यह निष्कर्ष होता है की शिक्षा लेना यह मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। परिस्थिती कैसी भी हो पर उस से मार्ग/नीकालकर कष्ट लेकर शिक्षा पूरी करनी चाहिए।
कौसल्या बैसंत्री ने अपनी जाति और गरीबी से जूझकर अपनी पढाई की और कुछ तो अलग करनेका प्रयास किया। कौसल्या जी को खेल कुद रुची थी
इसमे महत्वपूर्ण भाग यह है की शिक्षा यह एक मानवी जीवन का महत्वपूर्ण पहलू है।

Seen

Scanned with CamScanner